मई 2010

मूल्य : 30 रु.

ज्योतिष साधना

ज्योतिष एवं आध्यात्मिक ज्ञान का अनुपम प्रवाह

ज्योतिष, आयुर्वेद, स्वास्थ्य और योग की एकमात्र पत्रिका

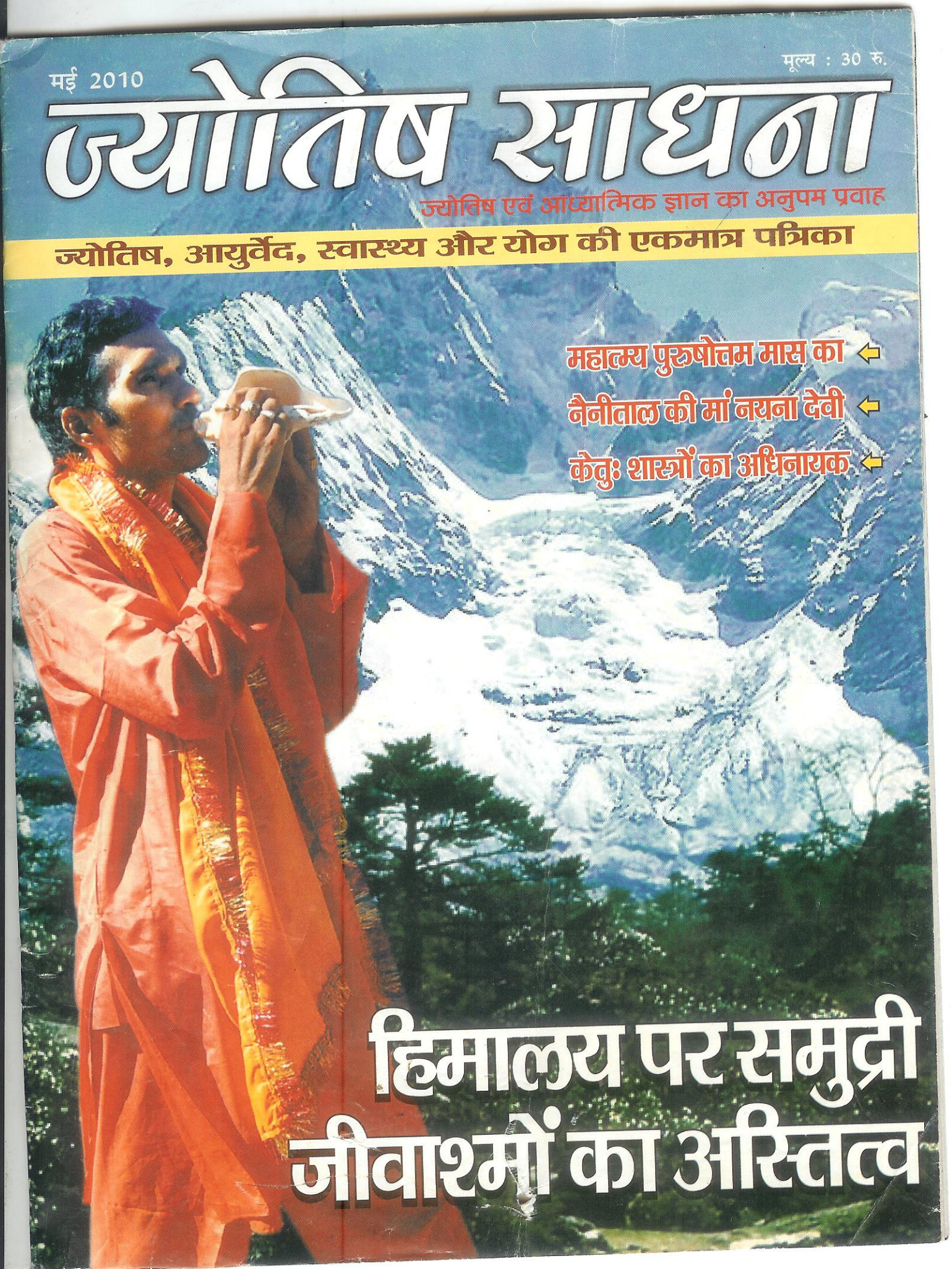

महात्म्य पुरुषोत्तम मास का

नैनीताल की मां नयना देवी

केतुः शास्त्रों का अधिनायक

हिमालय पर समुद्री जीवाश्मों का अस्तित्व

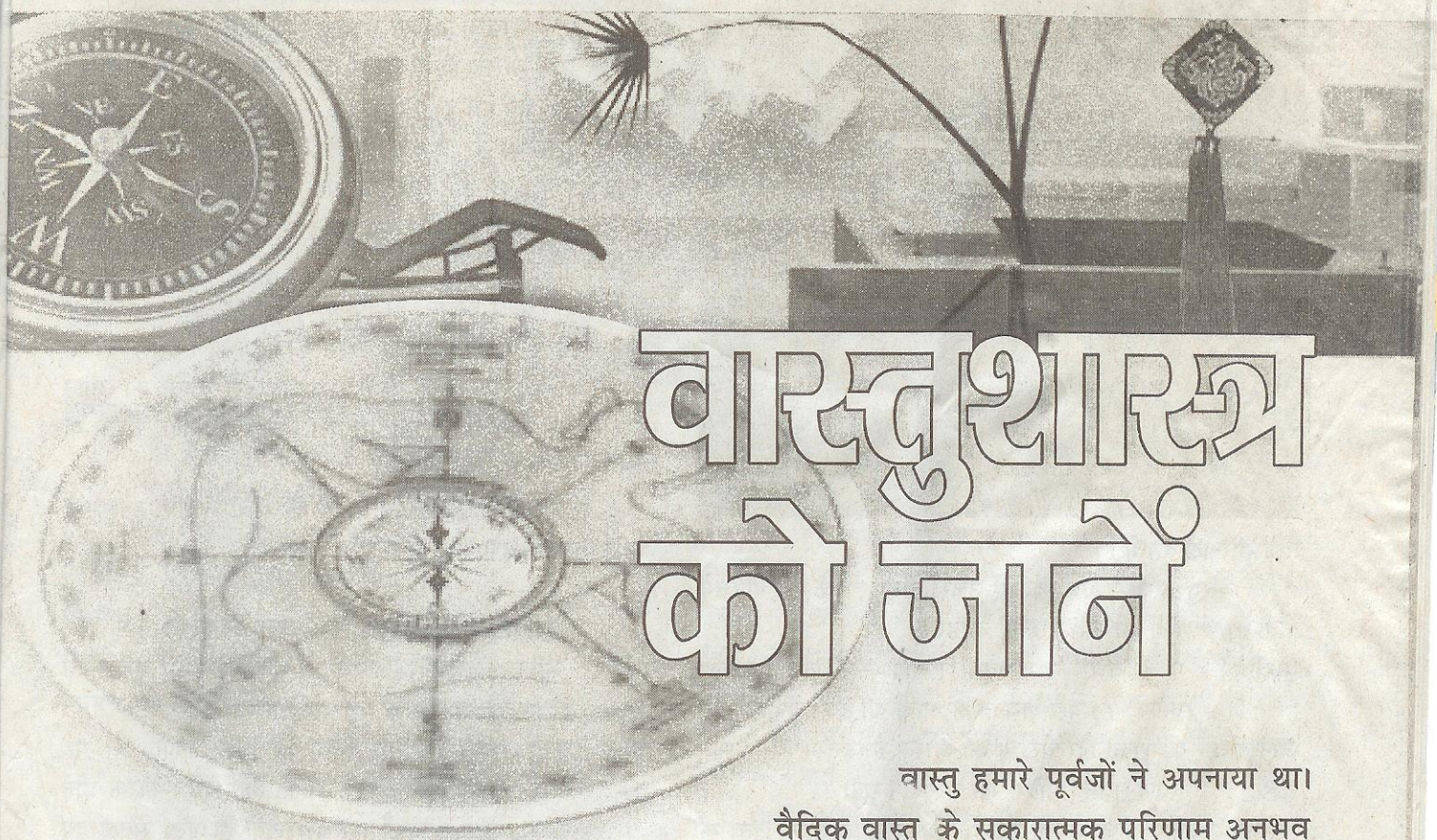

वास्तुशास्त्र को जानें

वास्तु हमारे पूर्वजों ने अपनाया था। वैदिक वास्तु के सकारात्मक परिणाम अनुभव किये गए हैं। ऋग्वेद में पूर्व दिशा को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। सूर्य की किरणें समस्त व्याधियों को नष्ट करती हैं। वास्तुशास्त्र एक प्राचीन जीवनपोगी विद्या है।

वास्तुशास्त्र एक प्राचीन जीवनोपयोगी विद्या है, जिससे व्यक्ति को भवन निर्माण के विषय में बताया गया है। इस शास्त्र के प्रयोग में बताया गया है। इस शास्त्र के प्रयोग से अधिक लाभ और जीवन में उन्नति होती है।

सुबह मकान की सभी खिड़कियों व दरवाजों को खोल दें, सूर्य प्रकाश के लिये। संध्या के समय जब दिन और रात्रि आपस में मिलते हैं, घर की सभी लाइटें जला दें। कुछ समय बाद बंद कर दें।

घर में आचार के डिब्बे खुले न रखें, रिश्तों में खटास आती है। Mirrar को पूरब व उत्तर दिशा में लगाएं।

दुकान व मकान की बरकत के लिये मुख्य द्वार पर गणपति की मूर्ति लगाएं। पद्म पुराण में उल्लेख है कि कुओं या जलाशयों के पास पीपल का वृक्ष लगाने मात्र से व्यक्ति को सैकड़ों यज्ञों का पुण्य प्राप्त होता है। उसके स्पर्श में चंचल लक्ष्मी प्रसन्न होती है। अशोक का वृक्ष लगाने से शोक से मुक्ति मिलती है।

बच्चों का कमरा उत्तर दिशा में होना चाहिए। क्योंकि उत्तर दिशा बुध की होती है। उत्तर-पूर्व दिशा का नाम ईशान कोण है। यह दिशा ईश्वर के लिए अर्थात पूजा स्थल से है।

घर के सामने कोई धर्मिकस्थल या अस्पताल नहीं होना चाहिए। घर के बाहर की ओर कोई बिजली की तार नहीं गुजरनी चाहिए। यह उर्जा घर को विचलित करती है। भोजन हमेशा पश्चिम दिशा में बैठकर करें। संतोष, सुख व शांति होगी। डाइनिंग टेबल पश्चिम दिशा में लगाएं।

घर में तिजोरी को दक्षिण भाग में इस तरह रखें कि उसका मुंह उत्तर को खुले। धन लाभ होगा। बच्चों के अध्ययन कक्ष में भगवान गणेश और मां सरस्वती की तस्वीर लगाएं। चारदीवारी का निर्माण करने से पूर्व किसी पंडित से शुभ मुहूर्त निकलवा लें।

इमारत को उत्तर और पूर्व से कम नीचा और दक्षिण और पश्चिम में अधिक ऊंचा रखें। सूर्य की अधिक किरणें इमारत के अन्दर आए, गर्मियों में ठंडक और जाड़े में गर्मी हो। दक्षिणी और पश्चिमी भाग खाली स्थान हो।

नींव खोदते समय तांबे व चांदी के सिक्के निकलें, तो शुभ है। पशु के सींग निकले तो शुभ है। हाथी दांत का टुकड़ा निकले तो शुभ है, सोना या सोने का पात्र निकले तो अशुभकारक है। पूर्व में ऊंची भूमि पुत्र व धन का नाश करती है। उत्तर में नीची भूमि धन-धान्यप्रद और वंशवृद्धि करती है। मध्य में नीची भूमि रोगप्रद

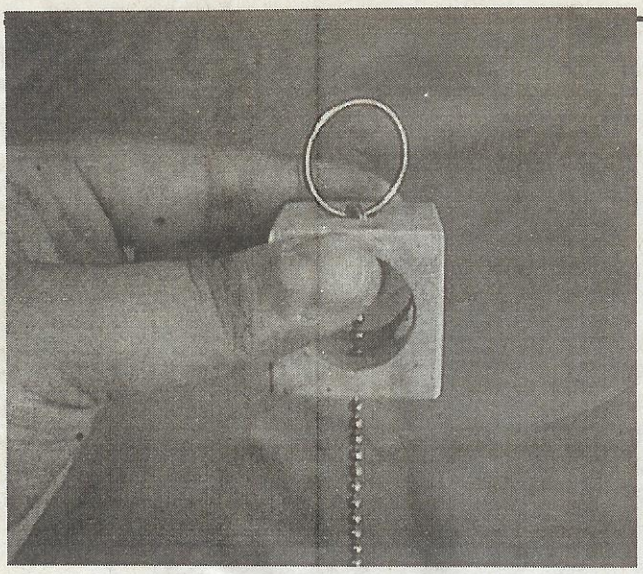

तथा सर्वनाश करती है।

वास्तुशास्त्र में चार दिशाएं उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम होती हैं। पंचभूतों को आश्रय लेना चाहिए।

पृथ्वी- पृथ्वी बुध का कारक है। दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य कोण) है। यहां शयनकक्ष, पानी की टंकी बनाएं।

जल तत्व- यह शुक्र और चन्द्रमा का कारक है। उत्तर-पूर्व (ईशान कोण)। यहां मंदिर, खाली स्थान रखें।

अग्नि- ताप, तेज अथवा ऊर्जा। रवि व मंगल अग्नि तत्व के गृह हैं। दक्षिण पूर्व (आग्नेय कोण)। चूल्हा, गैस स्टोव, बिजली का मीटर व हीटर आदि।

किसी मार्ग या गली का अन्तिम मकान कष्टदायी होता है।

पूर्वी दीवार पर एक बड़ा शीशा लगाएं। इससे भवन के पूर्वी क्षेत्र में प्रतीकात्मक वृद्धि होती है। परिवार के मृत व्यक्तियों का चित्र उतर की दिशा में लगायें। इन चित्रों को अपने मंदिर में न रखें।

घर में कहीं भी झाड़ू को खड़ा नहीं रखाना चाहिए। घर में बरकत नहीं होती। पूजा घर में हर भगवान की एक मूर्ति होनी चाहिए।

घर के दरवाजे खोलते तथा बंद करते आवाज नहीं आनी चाहिये, घर में कलह होगा। घर में जूते-चप्पल उल्टे या बिखरें हों तो घर में आशांति होगी।

रात को घर में जूठे बर्तन रखने से कभी लक्ष्मी नहीं आती।

घर में सुबह श्री सुक्त का पाठ व आरती करने से घर में सुख रहता है। शयनकक्ष में जूठे बर्तन रखने से परिवार में क्लेश और धन की हानि होगी।

घर में वाटर कलर और फ्रिज रसोई घर में वायव्य कोण में ईशान कोण में रखें। पढ़ने वाले बच्चों को पढ़ने वाले टेबल में ताश व शतरंज नहीं खेलने नहीं चाहिए। पढ़ने वाले बच्चों को अपने कमरे में हरा पर्दा लगाना चाहिए। पूजा घर में घी, तेल, सरसो या मिल के तेल का दीपक जलाएं।

शयनकक्ष का पलंग इस प्रकार लगा देना चाहिए, गृहस्वामी का सिरहाना दक्षिण और पैर उत्तर की ओर हों।

वास्तु में दिशाओं का महत्व

पूर्व- अग्नि को प्रभावित करती है। धन-धान्य की वृद्धि नहीं हो पाती। आकस्मिक धन की कमी।

ईशान (उत्तर-पूर्व)- पवित्र ईश्वर तुल्य माना जाता है। यह दिशा साहस, विवेक, धैर्य, ज्ञान और बुद्धि कारक होने के साथ-साथ कष्टों को दूर रखती है। पूरब संतान का फल देती है।

उत्तर दिशा- जल तत्व। बुध व केतु। धन लाभ, कर्म व भाग्य उदय करती है। जीवन में सभी प्रकार के सुख देती है।

आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) अग्नि तत्व माना जाता है। गुरु व राहु के कारण पूर्वी आग्निय प्रभावित होता है।

पश्चिम दिशा- यह वायु तत्व है। बच्चों की शिक्षा में रुकावट व मन चंचल, व्यापारी वर्ग को इस दिशा में अच्छा फल मिलता है।

वायव्य दिशा (उत्तर पश्चिम कोण)- यह वायु का स्थान। यह

एरावत यंत्र पर करें लक्ष्मी सिद्धि

एरावत यंत्र पर पुष्प धूप कुंकुम आक्षत अर्पित करें और स्फटिक माला से निम्न मंत्र की एक माला जप करें।

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धिं मे देहि नमः॥

OM AIM HREEM SHREEM SIDHIM MAIN DEHI NAMHA

इस मंत्र के नित्य प्रयोग से अथवा बुधवार एवं शुक्रवार के दिन इस मंत्र का जप करने से अवश्य लाभ होता ही है।

प्राणप्रतिष्ठित की हुई स्फटिक माला एवं साथ में एरावत यंत्र चांदी में रु. 1100/-

नोट : सामग्री पैकेट वी.पी.पी. द्वारा भी भेजी जाती है।

कार्यालय : WZ-1475, प्रथम मंजिल, रानी बाग, दिल्ली - 110034

शाखा कार्यालय : ज्योतिष साधना, 3456, राजा पार्क नजदीक महेन्द्र पार्क चौक, रानी बाग, दिल्ली-110034

दूरभाष : 9350725472, 011-65747584

दिशा स्वास्थ्य, शक्ति व दीर्धायु की है।

नैऋत्य दिशा (दक्षिण पश्चिम कोण)- भूत-प्रेत बाधाएं व अपमृत्यु तथा दुर्घटनाओं का है।

ब्रह्म स्थान (आंगन)- पारिवारिक वातावरण अच्छा रहता है।

उत्तर- पूर्व दिशा में सबसे अधिक खुला स्थान होना चाहिए।

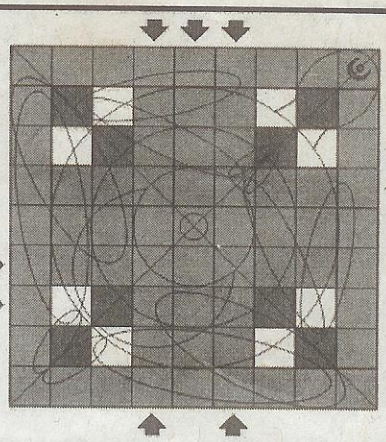

प्रवेश द्वार - यह आपके व्यक्तित्व का आईना है। उसके सामने कोई पेड़, बिजली या टेलीफोन का खंभा न हो। ड्राइंगरूम 12 X 8 फुट से लेकर 14 X 24 ताजा हवा और रोशनी हो।

लॉबी- यहां टी.वी. रख सकते हैं।

बेडरूम - 10 X 12 फुट या 14 X 16 फुट का हो।

रसोई- शैलफ ज्यादा ऊंचे नहीं होने चाहियें।

स्नानघर व शौचालय : खूबसूरत व दीवारों व फर्श पर टाइलों का इस्तेमाल हो। सीढ़ियां: इसमें रेलिंग हमेशा होनी चाहिये। गैरेज : इसमें शटर लगाएं। मुख्य शयनकक्ष फर्नीचर व साज-सज्जा का सामान सबसे अच्छा हो। हम अपना 1/3 जीवन का भाग यहां व्यतीत करते हैं। सिरहाना दक्षिण पूर्व की ओर मुंह हो। पुस्तकों की अलमारी पूर्व में हो।

रसोई घर: यह पोषण तथा स्वास्थ्य से संबंधित है। दक्षिण-पूर्व का कारक चूल्हा रसोईघर के प्रवेश द्वार के सामने नहीं होना चाहिये। स्त्री का मुंह पूर्व में होना चाहिये, खाना बनाते समय। पानी उत्तर-पूर्व में हो।

'भोजन करते समय सबसे पहले 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।' का उच्चारण करना चाहिए। भोजन करते समय मुंह पूर्व में करें। भोजन करते समय गायत्री का जाप करें।

रवि और मंगलवार को गृह निर्माण नहीं करते। महिला अगर मासिकधर्म से है, तो उस दिन गृह प्रवेश नहीं करना चाहिये। मूर्ति पूजा घर में न करें।

वास्तु दोष के कारण वस्तु दोष यंत्र रखें। गोल आकार का दर्पण सजने-संवरने के लिए बना होता है। टूटा दर्पण घर पर न रखें। सोने के कमरे, बिस्तर से दर्पण न दिखे।

घर को साफ-सुथरा रखें। झाड़ू और पोंछे दिखने नहीं चाहियें। झाड़ू को रसोई घर में न रखें। सुबह उठते घर में झाड़ू लगएं। डबल बेड पर दो गद्दे न लगाएं। रात को कपड़े बाहर न सुखाएं। सूखे फूल घर में न रखें। रोज घर में अगरबत्तियां या धूप जलाएं। वस्तु दोष कम होगा। घर के बाहर तुलसी का पौधा रखें।

रवाजे में कलेंडर या घड़ी न टागें। किताबों ी आलमारी खुली न रखें। नल का जल बहने ा धन बह जायेगा। बंद घड़ियों को हटायें। ापकी प्रगति रुक जाएंगी। कमरे के कोने व ोवारें खाली न रखें। टीवी कम से कम आठ ीट की दूरी पर रखें। शाम को पूरे घर की ाइट एक दफा के लिए जलाएं। लक्ष्मी घर में वेश करेगी।

घर में पर्दो का रंग- शयनकक्ष में हल्का ुलाबी या सलेटी व पूजा घर में हल्का पीला व सफेद रंग रखें। टीवी 7-8 फीट की दूरी से देखें। टेलीफोन के पास जल रखने से गलत नंबर होंगे। घर में मंगलवार व शनिवार को गूगल की धूप जलाएं। इससे घर की नकारात्मक ऊर्जा खत्म होगी। घर में शुद्ध देशी घी का दीपक सप्ताह में एक दफा जलाने से सारे दोष दूर होंगे। रोज घर में ताजे फूलों का गुलदस्ता लगाने से वास्तु दोष दूर होगा। घर के वस्तु दोष दूर करने के लिए नमक को पानी में डालकर पौंछा लगाएं। बीम के नीचे न बैठें। घर में कूड़ेदान रसोईघर से बाहर रखें। औरत अपने सजने के समान जैसे बिंदी, सिंदूर व क्रीम उत्तर-पूर्वी भाग में रखें।

स्वरशास्त्री कहते हैं, पति यदि बाएं करवट एवं पत्नी दाहिनी करवट लेटे, तो पुत्र संतान होगी। अगर दम्पत्ति में मतभेद हों, तो अपने शयनकक्ष में लाल रंग की चादर बिस्तर में बिछाएं। अपने शयनकक्ष में पूजा घर न बनाएं। पूजा घर अगर सीढ़ियों के नीचे खाली जगह होगा, तो घर में हमेशा क्लेश रहेगा। पूजा घर में पंच देव- सूर्य, गणेश, दूर्गा, शिव एवं विष्ण हमेशा होने चाहियें। घर के बाहर सिंदूर से स्वास्तिक चिह्न बनाएं। पूजा में तांबे का पात्र रखें। पूजा उत्तर या पूर्व मुंह करके करें। घर की सुख-समृद्धि के लिये गूगल, लोबान, चंदन, शक्कर व घी से पूजा करें। रसोईघर में पानी व चूल्हा साथ-साथ न रखें। घर में मनीप्लांट की बेल धन बढ़ाती है। घर में गूगल या कपूर जलाने से वास्तु दोष दूर होगा। घर के मुख्य दरवाजे पर अंधेरा न हो। वहां बल्ब या ट्यूबलाइट जलाकर रखें।

कोर्ट केस की फाइलें पूर्व दिशा या ईशान कोण में रखें।

वास्तु हमारे पूर्वजों ने अपनाया था। वैदिक वास्तु के सकारात्मक परिणाम अनुभव किये गए हैं। ऋग्वेद में पूर्व दिशा को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। सूर्य की किरणें समस्त व्याधियों को नष्ट करती हैं। वास्तुशास्त्र एक प्राचीन जीवनपोगी विद्या है। ■

-मोना आनंद
गोल्ड मैडलिस्ट
फोन: 9810165443

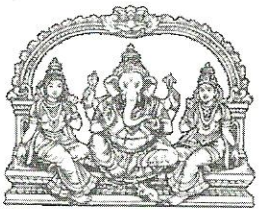

LORD GANESHA

Ganesh is usually named as Ganapati. Ganesh devotees consider him as the supreme deity. Ganesh is 'Vighneshvara', "The Lord of Obstacles". "The Lord who grants success" (Sidhi) He is involved at the beginning of auspicious opportunites, like marriage and other various occasions (inaugurating a shop, starting a business and taking examination etc.) The name Ganesh is a sanskrit compound joining the words 'Gana' (Sanskrit Gana meaning a group, mutitude) and 'isha' (Sanskrit meaning lord or master).Ganesh is offered with sweets as "Modaka' and in the shape of small Balls called "Laddus". He is worshipped with red sandalwood paste.

Ganesh is the first God for getting Puja in all Yagas in Hindu temples. Ganesha's head symbolises the Athram orthe soul, which is the ultimate supreme reality of human existence, and his Human body signifies maya or the earthly existence of Human being the elephant head denotes wisdom and its trunk represents OM.

Ganesh son of Siva and Parvati, is the God of knowledge and thresholds. Ganesha is often portrayed along with saraswati and Lakshmi, Symbolising that success and beauty always accompany wisdom. The Ganesha has eight incarnations.

1. Vakratunda 2. Ekadanta 3. Lambodara 4. Gajanana 5. Vikata 6. Vighnaraja 7. Dhumravarna 8. Mahodasha

The twelve name of Ganesha

1. Suhmukha - The very graceful Lord
2. Ekadanta - The Lord who has only one tusk
3. Kapila - The Lord of a Tawny color
5. Gajakarna - The Lord with elephant ears
5. Lambodara - The Lord with a prominent belly
6. Vikata - The Hisshapen
7. Vighnasaka - The Lord destroyer of obstacles
8. Ganadipa - Thge Lord protector of the Gana
9. Dhoomraketu - The Lord of A smoky color, ruler of the Kau Yoga
10. Ganadhyaksha - The Minister of the Gana
11. Bhalachandra - The Lord who wears the moon crescent on his head
12. *Gajanana - The Lord with a elephant face*

Ganesh Mantra is full of energy and power.

Ganesh Mantra ward off all trials and troubles Gracing the devotee of with every success.